Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – I

भाग – 5

पर्यावरण अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL – 1

CONTENTS

पर्यावरण अध्ययन

1. परिवार 1
   - समाजिक बुराईयाँ 5
2. वस्त्र एवं आवास 11
3. व्यवसाय 16
   - राजस्थान में उद्योग 17
   - हस्तकला 21
   - उपभोक्ता जागरूकता 36
   - सहकारिता 39
4. सार्वजनिक स्थल एवं संस्थाएँ 41
   - संसद 43
   - राज्य विधानमण्डल (विधानसभा) 54
   - स्थानीय स्वशासन 58
   - राजस्थान में पंचायतीराज 60
5. हमारी सभ्यता एवं संस्कृति 64
   - राष्ट्रीय प्रतीक 64
   - राष्ट्रीय पर्व 65
   - राजस्थान के मेलें व त्योहार 67
   - आभूषण, वेशभूषा व खान–पान 79
   - राजस्थान की विरासते एवं वास्तुकला 84
   - राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 96
   - राजस्थान में पर्यटन उद्योग एवं स्थल 101
   - राजस्थान में लोक देवता 108
   - राजस्थान में लोक देवियाँ 122

- राजस्थानी मुहावरे व लोकोक्तियाँ 129
- राजस्थान की चित्रकला 139

6. परिवहन एवं संचार 149

7. अपने शरीर की देखभाल 159

- सन्तुलित भोजन 165
- शरीर के आन्तरिक भाग की जानकारी 167

8. जीव एवं जगत 181

- वन्यजीव अभयारण्य 183
- राष्ट्रीय उद्यान 187
- राज्य में वन सम्पदा 202
- राजस्थान में कृषि 212

9. जल 230

- जल संरक्षण एवं संग्रहण 235
- सिंचाई परियोजनाएँ 237

10. पृथ्वी एवं अंतरिक्ष 241

- भारत के अंतरिक्ष यात्री 245

11. पर्वतारोहण 246

इकाई – 1

12. पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र एवं संकल्पना 253

इकाई – 2

13. संकल्पना, प्रस्तुतीकरण के उपागम, क्रियाकलाप/प्रायोगिक कार्य, चर्चा 261

14. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन 274

15. शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण समस्याएँ 277

16. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी 281

पर्यावरण अध्ययन

वस्त्र व आवास

वस्त्र

वस्त्र हमारी मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। अपने शरीर की सुरक्षा एवं व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए हम वस्त्र धारण करते हैं।

- मानव की प्राथमिक आवश्यकताओं में भोजन, वस्त्र, आवास तीन प्रमुख हैं।
- जगत का हर व्यक्ति, अपने देश काल, परिस्थिति एवं ऋतुओं के अनुसार वस्त्र धारण करते हैं।
- विश्व में लोगों के पहनावे की भिन्न–भिन्न प्रवृत्ति देखने को मिलती हैं। पुरुष लोग धोती, कुर्ता, पायजामा, कमीज, पेंट, शर्ट, सिर पर साफा व धोती प्रकार में लूँगी भी पहनने के काम में लेते हैं।
- स्त्रियाँ साड़ी, सलवार, लूगड़ा, लहंगा, पेटीकोट, घाघरे, आंगी व जवान युवतियाँ कुर्ता–पायजामा, जीन्स टॉप आदि पहनती हैं।
- विभिन्न ऋतुओं में शरीर की आवश्यकता के अलग–अलग होने के कारण भिन्न–भिन्न ऋतुओं में भिन्न प्रकार के वस्त्र पहने जाते हैं। जो निम्न हैं –

(i) सर्दियो में पहने जाने वाले वस्त्र

- सर्दियों में सर्दी से बचने के लिए गर्म व ऊनी भारी कपड़े पहने जाते हैं क्योंकि ऊन ऊष्मा रोधी होती है जो बाह्य ठण्ड से हमें बचाती है।
- सर्दियो में गहरे रंग के वस्त्र पहने जाते है क्योंकि गहरे रंग के वस्त्र ऊष्मा को अधिक अवशोषित कर हमें सर्दी से बचाने मे अहम योगदान देते हैं।
- ऊनी वस्त्रों के साथ रेशमी वस्त्र भी ऊष्मा रोधी होते हैं, जो हमें उष्णता प्रदान करते हैं अतः हमें सर्दियों के समय ऊनी व रेशमी वस्त्र धारण करने चाहिए।

सर्दियो में प्रमुख वस्त्र – स्वेटर, शॉल, टोपी, कोटी, मफलर।

(ii) गर्मियों मे पहने जाने वाले वस्त्र

- गर्मियों में सूती वस्त्र पहने जाते हैं। इस ऋतु में शरीर से पसीना अधिक निकलता है। सूती वस्त्रों द्वारा पसीने को सोख लिया जाता है जिससे शरीर को ठण्डक पहुँचती है। अतः गर्मी में सूती वस्त्र पहनना अधिक सुखदायी होता है अतः हमें गर्मियों में हल्के रंग के वस्त्र पहनने चाहिए।
- गर्मियों में हम हल्के रंग के कपड़े पहनते हैं क्योंकि हल्के रंग के कपड़े ऊष्मीय विकिरणों के अधिकांश भाग को परावर्तित कर देते हैं जिससे गर्मी कम लगती है। अतः गर्मियों में हल्के रंग के वस्त्र आराम दायक लगते हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में पहने जाने वाले वस्त्र एक नजर में

हिमाचल प्रदेश के वस्त्र

सुथान/सुधान – पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला सूती पायजामा
तेपांग – पुरुषों की टोपी
लौंचारी – महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र
किरा – महिलाओं द्वारा कमर पर बाँधे जाने वाला वस्त्र
शहिदे – महिलाओं द्वारा सिर पर पहने जाने वाला वस्त्र
शानो, लिंगजिमा – टोपियों के प्रकार
लिंगयच, पट्टु – शॉल के प्रकार
रिगोया – पुरुषों का लम्बा ऊनी कोट
छुबा – पुरुषों का अचकन के समान ऊनी कोट
होजूक – महिलाओं का कुर्ता
गछांग – पुरुषों द्वारा कमर पर पहने जाने वाला वस्त्र

पंजाब के वस्त्र
शरारा – पंजाब में महिलाओं द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र जिसे लांचा भी कहा जाता है।
फुलकारी – शॉल का प्रकार
टाम्बा/तहमत – पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली धोती

गुजरात के वस्त्र
पुरुषों के वस्त्र – अंगरखू/केडिया, फरहन, फेंटो, कफानी, चोरनोस
महिलाओं के वस्त्र – आथा/ कांजरी, चानियो, पोल्कू

लक्षद्वीप के वस्त्र
काची, थाटम – महिलाओं के वस्त्र

आसाम के वस्त्र
महिलाओं के वस्त्र – चादर, मेखला, मुगा, रिजाम्फाई, रिहा, फेफेक छुरा, चेखमचूस।
पुरुषों के वस्त्र – रिनसासो, फेटोंग, रिका, मिबु

अरूणाचल प्रदेश के वस्त्र
महिलाओं के वस्त्र – जैनसेम, किरशाह (सिर का वस्त्र), मुशाइम्स
पुरुषों का वस्त्र – मुकाक (कमर का वस्त्र)

जम्मू कश्मीर के वस्त्र
महिलाओं के वस्त्र – बुंरगा, तंरगा (सिर का वस्त्र), कुन्टोप्स
पुरुषों के वस्त्र – पठानी सूट, गोचा (भेड़ की खाल का बना वस्त्र)

मिजोरम के वस्त्र
महिलाओं के वस्त्र – डकमान्डा (कमर का वस्त्र), किरशाह (सिर का वस्त्र), पुआन चेई, ऐकिंग, टेपमोह

सिक्किम के वस्त्र
महिलाओं के वस्त्र – डुमड़यामा (साड़ी की तरह वस्त्र), पाचाउरी होजू, कुशेन, टारो पागडोन
पुरुषों का वस्त्र – थोकरू – डुम

घर पर वस्त्रो का रख रखाव
1. वस्त्रों को साफ सुथरा रखना
2. वस्त्रों को प्रेस करना
3. वस्त्रों की सुरक्षा

वस्त्रों की धुलाई
वस्त्रों की धुलाई – ड्राईक्लीन
चाय का धब्बा – नींबू या ग्लिसरीन
नीली स्याही – नमक और नींबू के रस से

- वस्त्रों की सफाई के लिए साबुन, डिटर्जेंट पाउडर का प्रयोग किया जाता है।
- वस्त्रों को ज्यादा मैले नहीं रखने चाहिए क्योंकि ऐसा करने से हम बीमारी के शिकार हो सकते है।

- कपड़े की ड्राईक्लीनिंग में पानी के स्थान पर पेट्रोल का प्रयोग किया जाता है।
- वस्त्रों के बटन सही से लगे हों व वस्त्रों के कहीं से भी फट जाने पर सिलाई कर लें ताकि वह और ना फटे।
- रेशमी वस्त्रों को पानी में भिगोकर ना रखें।

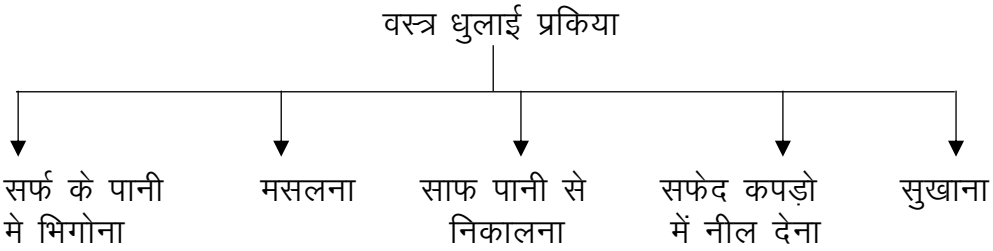

हथकरघा और पावरलूम

वस्त्र बनाने की पुरानी परम्परा रही है, जिसको बनाने के लिए विभिन्न सामग्री व तकनीकियों का प्रयोग किया जाता रहा है।

बाना – क्षैतिज दिशा में लगा धागा

ताना – लम्बवत् दिशा में लगा धागा

- सरकार ने हथकरघा क्षेत्र के विकास के लिए सर्वप्रथम 1940 में कदम उठाया।
  उद्देश्य – कारीगरों को स्थायीत्व देना
  विदेशी मुद्रा कमाने हेतु
- 1980, 1981, 1985 में कपड़ा नीति बनाई जिसमें हस्तकरघा क्षेत्र को प्रमुख बनाया।
- 2 अक्टूबर, 2005 – महात्मा गाँधी बुनकर योजना शुरू
  3 नवम्बर, 2005 – बुनकरों हेतु स्वास्थ्य बीमा योजना शुरू
  28 जून, 2006 – ''हैंडलूम मार्क'' की स्थापना।
- पावरलूम देश के कुल वस्त्र उत्पादन में 62% योगदान देता है।
- हमारे देश में लगभग 21.58 लाख पावरलूम है।
- ''टेक्नोलॉजी समुन्नयन फंड स्कीम'' Tues के तहत पावरलूम को आधुनिक बनाया जा रहा है।
- देश के प्रमुख पावरलूम समूह–
  सेलम, मदुरई, मोलापुर, भिवाड़ी, इरोड़, इचल करंजी, मालेगाँव, बुरहानपुर, किशनगढ़, भीलवाड़ा, पानीपत, लुधियाना।
- बुनकरों को दीर्धावधि ऋण प्रदान करने के लिए 1983 में नाबार्ड की स्थापना हुई।

आवास

- मानव दैनिक कार्य की समाप्ति पर रात्रि के समय सुरक्षित आवास की आवश्यकता के कारण आवास आवश्यक है।
- संसार के अधिकांश लोग प्राचीन काल में अब तक किसी–किसी समूह में रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति ने रहने के लिए घर बनाकर अधिवास के लिए हमेशा प्रयत्न किया है।

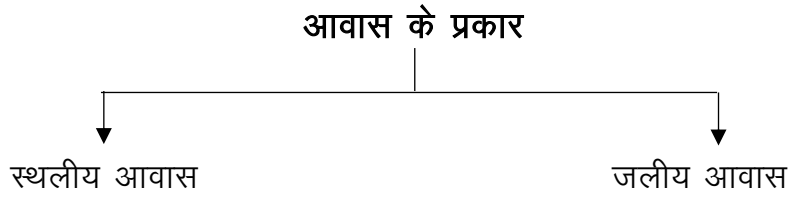

स्थलीय आवास

स्थल पर निवास करने वाले सभी जीवों का आवास स्थलीय आवास कहलाता है।
इसमें निम्न आवास शामिल हैं –
वनीय आवास, मरुस्थलीय आवास, पहाड़ी आवास, ध्रुवीय आवास घास भूमि में आवास।

- **वनीय आवास –** इस आवास में पेड़–पौधें दोनों पाये जाते हैं। ये जंगली जानवरों का आवास है।
- **मरुस्थलीय आवास** – यहाँ काँटेदार व मोटी माँसल युक्त पत्ती वाले पेड़–पौधें मिलते हैं।
  यहाँ ऊँट, कंगारू, चूहे आदि पाये जाते है।
- **घास भूमि आवास –** यहाँ लम्बी व मोटी घास पायी जाती है। यहाँ जेबरा, गजेला, हाथी, जिराफ, आदि मिलते हैं।
- **पहाड़ी आवास –** यहाँ भालू, याक, लोमड़ी मिलते हैं।
- **ध्रुवीय आवास –** यहाँ वर्ष भर बर्फ जमीं रहती है। यहाँ पाये जाने वाले जन्तुओं का शरीर फर युक्त होता है जिससे जन्तुओं की सर्दी में सुरक्षा होती है।
  यहाँ ध्रुवीय भालू, लोमड़ी, रेनडियर, स्नोगूज, खरगोश, भेड़, बाल्ड, ईगल देखने को मिलते हैं।
- **जलीय आवास –** जल मे निवास करने वाले जन्तुओं का निवास जलीय आवास कहलाता है।
  जलीय आवास के निम्न प्रकार है –
  1. **ताजा जलीय आवास –** नदियाँ, झीलें, तालाब, झरने आदि।
  2. **तटवर्ती आवास –** यहाँ समुद्री जल व नदियों के ताजे जल का मिश्रण मिलता है।
  3. **समुद्री आवास –** इसमें व्हेल, मछली, कछुआ, समुद्री साँप आदि मिलते हैं।

जीवों मे विशिष्ट आवास

घोंसला – चिड़िया, कबुतर, कठफोड़ा, बुलबुल
बिल – सांप, चूहा, खरगोश, गोयरा, दीमक, मकोड़े
गुफा – शेर, भालू, लोमड़ी
पेड़ – बंदर, कौआ, तोता, कमेड़ी, कबुतर
जल – मछली, मगरमच्छ
छाता – मधुमक्खी, ततैया (टांटिया)
घर – चूहे, पालतू पशु (गाय, भैंस, भेड़, बकरी, बाड़ा)

केनल	कुत्ता
शूकर शाला	सूअर
अस्तबल	घोड़ा
जल	मकड़ी
दड़बा	मुर्गी
पेड़ की कोटर	कंगारू

मानव आवास

आवास का तात्पर्य – ये मानव के रहने के लिए ईंट, पत्थर, कंकड़, संगमरमर, लकड़ी, गारे, गोबर का बना होता है। इसमें झोपड़ी से लेकर महल तक हो सकता है।

आवास की आवश्यकता

1. विश्राम के लिए
2. वस्तुओं को रखने व सम्पत्ति सुरक्षा हेतु
3. जंगली पशुओं, जीव जन्तुओं से सुरक्षा हेतु
4. गतिविधि संचालन हेतु

प्रमुख आवास

इग्लू – ये आर्कटिक क्षेत्र मे टुण्ड्रा प्रदेश में निवास करने वाली एस्कीमों जनजाति का निवास है।

- ये लोग हड्डी, खाल, बर्फ से मकान बनाते हैं।
- ये रात्रि में रोशनी के लिए सील मछली की चर्बी का प्रयोग करते हैं।

ट्यूपिक – एस्कीमों जनजाति के ग्रीष्म कालीन आवास।
कू – भील जनजाति के आवास स्थल को कू कहते हैं।
टपरा – राजस्थान के आदिवासियों के सामान्य घर को टपरा/टापरा कहते हैं।
तिपी – अमेरिका के रॉकी पर्वत क्षेत्र में रेड इण्डियन लोगों द्वारा बिसन बैल के चमड़े व बाँसो से बने घर।
भाखर या ढाँचा – गरासिया जनजाति के घर।
युर्त – खिरगिज जाति के ग्रीष्मकालीन आवास। ये चमड़े के बने होते हैं।
चिकीज – अमेरिका में सेमिनोल इण्डियन द्वारा बनाये गये घर।
होगान – अमेरिका की आदिवासी जाति के घर।
ऑल – यूरोप के कबीलाई जनजातियों द्वारा लकड़ी व चमड़े द्वारा बनाया गया घर।
बंगाल ओराक/कालोम ओराक – संबाल जनजाति के आवास।
झोंपा – शुष्क व पश्चिम राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में बने घर।
खाइमस – बद्दू जाती के लोगों के तम्बू।
पड़वा – राजस्थान के मरुस्थल में बने घर।

भवन निर्माण सामग्री

पत्थर	सीमेंट	पनी	गोबर
ईंट	सरिया	लकड़ी	सेनेटरी सामान
भाट्टा	बजरी	लोहा	संगमरमर
बर्फ	बाँस	प्लास्टिक	एस्बेस्टस

आवास व निकटवर्ती स्थानों की स्वच्छता

1. पानी की नालियाँ साफ सुथरी ढकी हो।
2. घरों की व आस–पास की प्रतिदिन सफाई हो।
3. कमरों से प्रदुषित हवा निकालने के लिए रोशनदान बनाये जाएँ।
4. समस्त कुड़े–करकट को कचरा पात्र में डालें।
5. रसोईघर मे धुएँ की निकासी के लिए चिमनी की व्यवस्था की जानी चाहिए।
6. घरों में फिनाइल दवाइयों का प्रयोग कर सफाई की जाए।
7. कीटनाशकों, फिनाइल, बीएचसी पाउडर आदि का छिड़काव हो।
8. पानी की टंकियों की नियमित सफाई हो।
9. मृत जानवरों को जलस्त्रोत या बस्तियों से दूर गढ्ढे में दबा देना चाहिए।
10. बस्ती के चारों ओर वृक्ष लगाने चाहिए।
11. भारत सरकार ने 15 अगस्त, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम चालू किया जिसके बाद स्वच्छता में काफी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।

राजस्थान मे लोकदेवता

राजस्थान में कुल पाँच पीर है – 'राह में पंगो'

1. रामदेवजी
2. हड़बूजी
3. मांगलिया मेहाजी
4. पाबूजी
5. गोगाजी

- ऐसे लोकदेवता जो सभी धर्मो में समान रूप से पूजे जाते हैं।
- ये पीर के श्रेणी में आते है।
- झुन्झार – गौरक्षा करते समय अपने प्राणों का त्याग।
- खवि – पित्तर पूजा से ख्याती प्राप्त लोकदेवता
- खारामामा – जानवर की बली (शराब का सेवन)
- मीठा मामा – साधारण प्रकार का भोग

रामदेवजी

- पीरों का पीर रामदेवजी हैं।
- जन्म – उण्डुकासमेर गाँव शिव तहसील, बाड़मेर वि. स. 1405/1409
- पिता – अजमलजी, माता – मेणादें (मेणीदेवी)
- पत्नी – नेतल दे – दलजो सोढा की पुत्री – अमरकोट – पाकिस्तान
- बहिन – सुगणा बाई, लांच्छा
- धर्म बहन – डाली बाई – मेघवाल जाति
- भाई – ब्रह्मदेव – बलराम का अवतार
- गुरू – बालीनाथ – गुफा – मसुरीया पहाड़ी जोधपुर
- अवतार – कृष्ण अवतार
- वंश – अर्जुन वंशीय
- वाहन – लीला घोड़ा (श्वेत) रंग – सफेद
- जाति – राजपूत (गोत्र – तंवर)
- समाधि – जीवित – भाद्रपद शुक्ल एकादशी (रूणेचा, रामदेवरा, जैसलमेर)
- वि.स./1458 ई. में।

उपनाम

कुष्ठ रोग निवारक देवता , ठाकुर जी

- पीरों का पीर, साम्प्रदयिकता सद्भाव का देवता। मक्का के 5 पीरों ने पंचपीपली नामक स्थान पर पीरों का पीर कहा था।
- सहयोगीः हरजीभाटी, लक्खी बंजारा, रत्ना राईका हैं।
- यह भारत के सबसे बड़े लोकदेवता है।
- रामदेवजी ने शुद्धि आन्दोलन चलाया परावर्तन नाम से इस आन्दोलन में मुसलमान बने हिन्दूओं की शुद्धि कर वापिस हिन्दू बनाया था।
- भैरव राक्षस का वध सातलमेर (पोकरण) में रामदेव जी ने किया।

- रामदेव जी ने छुआछुत को समाप्त किया था।
- रामदेव जी ने कामड़िया पंथ की स्थापना की।
- रामदेव जी ने कुष्ठ रोग निवारण किया था।
- रामदेव जी के चमत्कारी उपाय को 'पर्चा देना' कहते है।
- एकमात्र लोकदेवता रामदेव जो कवि भी थे।
- रामदेव जी ने 'चौबीस बणियां' ग्रन्थ लिखा।
- रामदेव जी के मेघावाल जाति के भक्त 'रिखिंया' कहलाते हैं।
- हिन्दू कृष्ण का अवतार मानकर व मुसलमान 'रामसा पीर' के रूप में पूजते हैं।
- डालीबाई ने रामदेव जी के एक दिन पहले समाधि ली थी।
- रामदेव जी हड़बूजी के समकालीन थे।
- रामदेव जी के मन्दिरों को 'देवरा' कहा जाता है जिन पर श्वेत या 5 रंगों की ध्वजा फहराई जाती है, जिसे 'नेजा' कहते हैं। (सफेद, काला, लाल, हरा, नीला)
- रामदेव जी मन्दिर का निर्माण गंगासिंह ने सन् 1931 में करवाया था।
- रामदेव जी ने मूर्ति पूजा, तीर्थयात्रा, जाति प्रथा का विरोध किया अतः एकमात्र लोकदेवता जिसके प्रतीक चिन्ह के रूप में 'पग्लये – पद्चिन्ह' पूजे जाते हैं।
- रामदेव जी समाज सुधारक भी थे।
- रामदेव जी का मेला 'भाद्रपद शुक्ल दशमी' (भादवा ''बाबेरी बीज'' शुक्ल द्वितीया से भादवा शुक्ल एकादशी) को रूणेचा जैसलमेर में मेला भरता है।
- यह साम्प्रदायिक सद्भाव का सबसे बड़ा मेला है।
- लोकदेवताओं में सबसे लम्बा गीत रामदेव जी का है (60. मी.)
- रामदेव जी के रात्रि जागरण किये जाते है जिन्हें 'जम्मा' कहते हैं।
- रामदेव के यात्री 'जातरू' कहलाते हैं।
- रामदेवजी के समकालीन मल्लीनाथ जी थें जिससे पोकरण क्षेत्र प्राप्त किया।
- रामदेवजी को कपड़ा बना घोड़ा चढाया जाता है। जिसे 'घोड़ले' कहते हैं।
- रामदेवजी के याद में गाये जाने वाले गीत ब्यावले कहलाते हैं व फड़ ब्यावले भोपे बांचते है। (जैसलमेर, बीकानेर)
- रामदेवजी का पवित्र स्थान 'पंची बावड़ी' पोकरण (जैसलमेर) हैं।
- रामदेवजी ने हरजी भाटी को पहला पर्चा दिया था।
- रामदेवजी की समाधि स्थल – राम सरोवर की पाल कहलाती है।
- रामदेवजी ने अपने बहन सुगणा को पोकरण क्षेत्र दहेज में दे दिया था व रूणेचा की स्थापना की थी।
- सुगणा बाई का विवाह पूंगल (बीकानेर) के शासक विजयसिंह के साथ हुआ।
- रामदेवजी के भक्त जयकारे लगाते हैं – जिसे 'बादली' कहते हैं।
- रामदेवजी का धागा/तांती – पातरी / कुण्डली कहलाते हैं।
- रामदेवजी का थान/देवरा कंदन वृक्ष के नीचे होते हैं।
- रामदेवजी के पद्चिन्ह – पग्लया कहलाते हैं इनके रखने के स्थान को ताख या आलिया कहते हैं।
- रामदेवजी की 'कसम' 'आण' कहलाती है।

मुख्य पूजा स्थल

- खुण्डियावास – अजमेर (राजस्थान का छोटा रामदेवरा)
- सूरता खेड़ा – चित्तौड़गढ
- बिरांटिया – पाली
- कठोती – नागौर
- जूनागढ़ – गुजरात (भारत का छोटा रामदेवरा)
- मंसुरिया पहाड़ी – जोधपुर
- रामदेवजी की राजस्थान से बाहर मान्यता गुजरात व मध्यप्रदेश में हैं।
- यूरोप क्रांति से पहले रामदेव जी द्वारा हिन्दू समाज को दिया गया सन्देश 'समता व बन्धुता' था।
- रामदेवजी ने पश्चिमी भारत में मतान्तरण व्यवस्था को रोकने को अहम भूमिका निभाई थी।
- रामसरोवर पाल के किनारे – पर्चा बावड़ी है।
- रामदेवजी फड़ का निर्माण – चौथमल जोशी द्वारा – वाद्य यंत्र – रावण हत्था तथा वाचन – कामड़ जाति के भोपे करते हैं।
- इस फड़ को मुख्यतः कोली, भांभी, बलाई अन्य रामदेव जी भक्तों द्वारा बाँचा/गाया जाता है।

गोगाजी

- जन्म – 1003 वि. सं. – ददरेवा (चूरू) (भाद्रपद कृष्ण नवमी)
- पिता – जेवरसिंह, माता – बाच्छल दे।
- पत्नी – 2
- प्रथम विवाह – सुरियल – कजरीवन की पुत्री – उत्तरप्रदेश
- दूसरा विवाह – केलमदे – कोलुमण्ड (जोधपुर) बुढोजी राठौड़।
- पुत्र – कुल – 47 गुरू – गोरखनाथ जी → साँपो में सिद्धि प्राप्त।
- सवारी – नीली घोड़ी (गोगा बप्पा) कहते हैं– (रंगनीला)
- **उपनामः**

  जाहरपीर – महम्मूद गजनवी ने कहा था।

  ↓→ शाब्दिक अर्थ – ''साक्षात् देवता''
- राजा मुण्डुलिक, जिन्दा पीर, साँपो का देवता, गौरक्षक
- प्रतिक चिन्हः पत्थर की मूर्ति पर साँप का चित्रण।
- गोगाजी का छोटा मन्दिर – थान कहलाता है जो खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।
- ध्वजा – सफेद रंग की होती है।
- गीत – छांवली कहलाते हैं।
- पुजारी – चायल कहलाता है।/चेवाण
- मौसेरे भाई – अर्जन – सर्जन थे। – माता – कांछल देवी थी ।
- गोगाजी का जन्म गोरखनाथ जी द्वारा दिये गये 'गुगल' फल से हुआ था।
- गोगाजी ने नागदेवता ताक्षक को पराजित कर अपनी पत्नी केलम दे को पुनः जीवित कराया। अतः इसे साँपो का देवता कहते हैं।
- मौसेरे भाई अर्जन – सर्जन के साथ जमीनी विवाद के कारण सांचौर जालौर में महम्मूद गजनवी ने गोगा जी की गायें लूटी।
- गोगा जी महम्मूद गजनवी के सामने गौरक्षा करते हुए वीर गति को प्राप्त हो गया।

- गोगाजी व गजवनी के मध्य युद्ध का वर्णन कवि मेह द्वारा रावसाल ग्रन्थ में किया गया है।
- कर्नल रॉड के अनुसार गोगाजी के 47 पुत्र न 52 भतिजों के साथ यह युद्ध किया व वीर गति को प्राप्त सतलज नदी के पास 1023 ई. गजनवी के साथ गोगाजी ने 11 बार युद्ध किया था।
- गोगाजी के समकालीन महम्मूद गजनवी व गोरखनाथ जी हैं।
- गोगाजी की धूरमेड़ी 'गोगामेडी' तहसील नोहर जिला हनुमानगढ में है।
- गोगामेड़ी गाँव में गोगाजी के मुख्य मन्दिर का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने मकबरेनुमा आकृति में करवाया।
- सन् 1931 में आधुनिक मंदिर का निर्माण गंगासिंह ने करवाया।
- गोगाजी मन्दिर के मुख्य द्वारा पर अरबी भाषा में बिस्मिला शब्द अंकित है, इसका अर्थ – शुभ होना।
- गोगाजी के पुजारी **चायल** कहलाते हैं।
- 11 माह पूजा मुस्लिम (कयामखानी मुस्लिम) करते हैं।
- भाद्रपद के एक महीने में पूजा हिन्दू 'मेहर' – मेघवाल करते है जिन्हें भोपा कहते हैं।
- गोगाजी का मुख्य मंदिर गोगामेड़ी है।
- गोगाजी का मेला – भाद्रपद कृष्ण नवमी को गोगामेडी में लगता है।
- भादवा सुदी एकम से भादवा सुदी ग्यारस तक।
- यह उत्तरी – भारत का सबसे बड़ा मेला है।
- इस मेले में 'गोगा नृत्य' किया जाता है।
- गोगाजी की ओल्डी साँचोर (जालौर) की प्रसिद्ध है।
- यहाँ पर गोगाजी की गायें लूटी गयी।
- इस ओल्ड़ी का निर्माण राजाराम कुम्हार ने करवाया। (केरियां गाँव)
- गोगाजी की शीश मेड़ी/सिद्ध मेड़ी ददरेवा (चूरू) में है।
- यहाँ पर गोरखाना तालाब है। गोगाजी की घोड़ी की प्रतिमा है।
- यहाँ पर गोगाजी की घोड़ी पर सवार प्रतिमा है। (गोरखनाथजी की प्रतिमा)
- हिन्दू 'नागराज' व मुस्लिम गोगापीर के रूप में पूजते हैं।
- गोगाजी का वाद्य यंत्र डेरू है – आम की लकड़ी से निर्मित होता है।
- गोगाजी को गुजरात में रेबारी जाति के लोग 'गोगामहाराज' कहते हैं।
- राजस्थान से बाहर मान्यता – हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश में है।
- गोगाजी राजपूत जाति में चौहान वंश थे।
- हिन्दू – मुस्लिम एकता एंव सांस्कृति समन्वय की दृष्टि से गोगाजी का विशेष महत्व है।
- उत्तर प्रदेश में मुस्लिम समुदाय के लोग 'जाहरपीर' के रूप में पूजते हैं।
- यह लोग गोगाजी के मेले में लौहे की छड़ी से अपने शरीर पर प्रहार करते हैं, जिसे **'पेंजण**' कहते हैं।
- गुगो – गु – गुरू, गो – गोरखनाथ को द्योतक है।
- गोगामेड़ी के चारों तरफ जंगल को 'पणिरोपण' एवं जोहड़ कहते हैं।
- भाद्रपद कृष्ण नवमी (गोगा नवमी) को गोगा जी की 'अश्वरोही' भाला लिए यौद्धेय के प्रतीक के रूप में अथवा सर्प के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है।
- गोगाजी का मन्दिर खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।
- गोगाजी को जाहरपीर के रूप में पूजने से 'सर्प देव' का विष प्रभावहीन हो जाता है।

केसरिया कुंवरजी

- यह गोगाजी का ज्येष्ठ पुत्र था।
- मंदिर खेजड़ी वृक्ष के नीचे ध्वजा सफेद रंग से युक्त।
- जन्म स्थल – ददरेवा (चूरू)
- इसे भी साँपों का देवता कहते हैं – भोपे साँपो का जहर मुख से चूसकर बाहर निकालते है।
- पूजास्थल – ददेरेवा (चूरू)
  - ➢ बुध्मसर (हनुमानगढ)
- मेला – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी

मेहाजी मांगलिया

- जन्म स्थल – बापिणी गाँव (जोधपुर) 14वीं सदी
- जोधपुर शासक राव चूँड़ा के समकालीन थे।
- पिता – गोपालराव सांखला
- गौत्र – राजपूत – 'सांखला'
- कर्नल जेम्स टॉड ने गौत्र – पंवार बताया।
- ननिहाल पक्ष में पालन पोषण होने के कारण 'मांगलिया' कहलाये।
- मेला – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी – बापिणी गाँव जोधपुर
- घोड़े का नाम – किरड़ काबरा था।
- जैसलमेर के राव रणगदेव भाटी से गौरक्षा करते हुए युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए।
- मेहाजी का सारा जीवन धर्म की रक्षा व मर्यादाओं की पालना में बीता था।
- पुजारी – मांगलिया राजपूत
  - ↓→ वंश में वृद्धि नहीं होती है।
- अच्छे शकुन शास्त्री भी माने जाते थे।

पाबूजी

- जन्म – वि.स. 1296 कोलुमण्ड – फलौदी – जोधपुर
- पिता – धाँधल जी माता – कमला दे।
- पत्नी – फूलन दे/सुप्यार दे – अमरकोट पाकिस्तान– सूरजमल सोढा
- जाति – राजपूत – गौत्र – राठौड़
- सवारी – केसर कालवी (घोड़ी) (यह देवल चारणी की थी।)
- अवतार – लक्ष्मण
- उपनाम – हाड़ – फाड़ के लोकदेवता, उँटो का देवता
- प्लेग रोग का निवारक देव, गोरक्षक देवता
- पाबूजी राठौड़ ने देवली चारणी की गायों की रक्षा करते हुए देचूं (जोधपुर) में बहनोई जायल (नागौर) शासक जिन्दराव खिंची के सामने युद्ध करते हुए 1276 ई. में वीर गति को प्राप्त।
- पाबूजी की जीवनी ग्रन्थ पाबू प्रकाश में मिलती है – लेखक – आसियाँ मोडजी।
- पाबूजी ने 7 थोरी भाइयों की रक्षा गुजरात के अन्ना बागेला नामक शासक से की इस कारण इन्हें थोरी जाति अराध्या देव मानती है (थोरी/भील)

पाबूजी के सहयोगी

- चान्दा, हसमल, डेमा, सलजी सोंलकी, सावंतजी राईका।
- सभी लोक देवताओं में सर्वाधिक लोक प्रिय फड़ पाबूजी की है।
- पाबूजी फड़ का वाचन करते समय रावण हत्था वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है। थोरी/राईका जाति के लोग सांरगी वाद्य मंत्र का प्रयोग करते हैं।
- पवाड़े – वीर पुरूषों की लोकगाथाएं है।
- पाबूजी के पवाड़े पढते समय 'माठ' वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।
- राईका/रेबारी व ऊँट पालक जाति के अराध्या देव!
- ऊँटों के सर्रा रोग के निवारक हैं।
- प्रतीक चिन्ह – अश्वारोही भाला एवं झुकी हुई पगड़ी।
- मन्दिर – कोलुमण्ड (जोधपुर) में चैत्र अमावस्या को मेला भरता है इस मेले में थाली नृत्य करते हैं।
- सर्वप्रथम ऊँट लाने का श्रेय मारवाड़ में पाबूजी को है।
- पाबूजी की याद में गाये जाने वाले गीत 'पवाड़े' कहलाते है।
- पाबूजी हमेशा दुल्हे के भेष में रहते हैं।
- मुहणोत नैणसी महाकवि मोडिया आशजी के अनुसार पाबूजी का जन्म वर्तमान बाड़मेर से आठ कोस दूर खारी खाबड़ के जूना ग्राम में अप्सरा के गर्भ से हुआ। पाबूजी ने विवाह में $3\frac{1}{2}$ फेरे लिए अतः पश्चिमी राजस्थान मे पाबूजी के स्मृति में 4 फेरे लिए जाते हैं।
- महेर जाति के मुसलमान इसे पीर मानकर पूजा करते हैं।

हड़बूजी

- जन्म – भूंडेल गाँव (नागौर) 15 वीं सदी
- पिता – मेहाजी साँखला
- जाति – राजपूत
- गौत्र – सांखला
- वाहन – सियार
- मन्दिर में बैलगाड़ी की पूजा होती है।
- एकमात्र गौ सेवक लोकदेवता था।
- हड़बूजी ने मेवाड़ अधिकार क्षेत्र से मण्डोर को मुक्त कराया व राव जोधा को आशीर्वाद व तलवार भेंट की थी।
- राव जोधा ने मण्डोर अधिकार के बाद हड़बूजी को बैंगटी क्षेत्र व गाड़ी उपहार स्वरूप दी थी।
- हड़बूजी का पूजा स्थल समाधि स्थल बैंगटी गाँव (फलौदी) जोधपुर में हैं।
- यहाँ पर भाद्रपद शुक्ल दशमी को मेला भरता है।
- इस मंदिर का निर्माण जोधपुर शासक 1721 ई. में अजीत सिंह ने करवाया।
- अपने पिता की मृत्यु के बाद हरभमजाल क्षेत्र में रहने लगे, यहाँ पर रामदेवजी के 8 दिन बाद अस्त्र–शस्त्र त्याग गुरू बालीनाथ से दीक्षा ली।
- रामदेव जी के 8 दिन बाद जीवित समाधि ली थी।
- हड़बूजी व रामदेव जी मौसेरे भाई हैं।
- इसे महान् शकुन शास्त्र का जनक कहा जाता है।
- गायों का सेवक एकमात्र लोकदेवता।

- सन्यासी लोकदेवता भी कहते हैं।
- अपंग/पंगू गायों की सेवा का कार्य किया।

मल्लीनाथजी

- जन्म – विक्रम संवत् 1415 तिलवाड़ा – बाड़मेर
- पिता – मारवाड़ के रावल सलखा/रावतीड़ा जी।
- माता – जीणा दे। जीणा दे के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में।
- पत्नी – रूपा दे – मन्दिर – भालासाल गाँव बाड़मेर
- गुरू – उगम सिंह भाटी
- **उपनाम**
  त्राता (रक्षक), चमत्कारी पुरूष, सिद्ध लोकदेवता, मालाणी का धणी मल्लीनाथ ने 1378 ई. में फिरोजशाह तुगलक व मालवा **सूबेदार निजामुद्दीन** की सेना को मार भगाया था।
- मल्लीनाथ ने 1399 ई. में कुण्डापंथ की स्थापना की थी व मारवाड़ के सारे संतो को एकत्र कर एक वृहद् हरि कीर्तन करवाया था। (चैत्रशुक्ल – द्वितीया)
- मारवाड़ में चेचक व बोदरी रोग का निवारण किया।
- मल्लीनाथ ने अपने भतीजे राव चूड़ा की 1394 ई. में मण्डोर व नागौर जीतने में मदद की थी।
- मल्लीनाथ जी की मृत्यु चैत्र शुक्ल द्वितीया को हुई थी।
- अपनी रानी रुपादे की प्रेरणा से उगमसिंह से शिक्षा ग्रहण कर योग साधना की दीक्षा प्राप्त की। (1389 ई.)
- पिता मृत्यु के पश्चात् मल्लीनाथ अपने चाचा कान्हड़दे के यहाँ महेवा में शासन प्रबन्धन देखने लगे व कान्हड़दे की मृत्यु के पश्चात् महेवा के स्वामी बन गये थे।
- मेलाः चैत्रकृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी तक
- राजस्थान का सबसे प्राचीन पशु मेला है।
- इस मेले में थारपारकर व कांकरेज पशुओं का क्रम–विक्रय होता है।
- यह मेला लूणी नदी के तट पर लगता है।
- मल्लीनाथ जी के नाम पर ही बाड़मेर क्षेत्र को 'मालाणी' कहा जाने लगा।
- मल्लीनाथ निर्गुण व निराकार ईश्वर को मानते थे।

वीर बिग्गाजी/बग्गाजी

- जन्म – रिड़िगांव – बीकानेर (जाट परिवार में)
- पिता – राम मोहन व माता – सुल्तानी देवी।
- जाखड़ समाज के कुल देवता हैं।
- मेला – 14 अक्टूबर बिग्गा गांव श्री डूँगरगढ तहसील बीकानेर में भरता है।
- गोरक्षा करते हुए मुस्लिम अंक्राताओ से राठेली जोहड़ी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गये थे – 1336 ई./वि. स. 1393 बीकानेर में यह युद्ध हुआ।

पन्नराजजी

- पनरासर – नागा गाँव जैसलमेर (क्षत्रिय परिवार में जन्म)
- इन्हें तोतले बच्चों का लोकदेवता कहते हैं।
- ब्राह्मणों की गायों की रक्षा करते हुए मुस्लिम आक्रान्ताओं के सामने कोटड़ा गाँव जैसलमेर में वीर गति को प्राप्त हुए।

- वर्ष में दो बार मेले लगते हैं – भाद्रपद शुक्ल दशमी, माध शुक्ल दशमी] पनरासर गाँव में
- मुख्य स्थल – पनरासर गाँव (जैसलमेर)

वीर फत्ताजी

- जन्म – सांथु गाँव जालौर (गज्जारणी परिवार में)
- मंदिर – सांथु गाँव जहाँ भाद्रपद शुक्ल नवमी को मेला भरता है।
- फत्ता जी ने गाँव की मान मर्यादा के लिए प्राण त्याग दिये थे।
- अतः इसे ग्राम रक्षक देवता कहते हैं।
- फत्ता जी ने शास्त्र विद्या ज्ञान प्राप्त किया।

भोमिया जी

- इन्हें भूमि रक्षक देवता कहते हैं।
- भूमि रक्षक देवी – दुर्गा माता हैं। अश्विन शुक्ल अष्टमी
- राजस्थान के प्रत्येक गाँव के बाहर मंदिर है।
- इन्हें अकाल रक्षक देवता व राज्य की सीमा रक्षा देवता भी कहते हैं।
- प्रतीक चिन्ह के रूप में काष्ठ का तोरण होता है।
- नारसिंह भोमिया – आमेर (जयपुर), हरदीन भोमिया – नागौर
- सूरजमल भोमिया – दौसा, मोती भोमिया – नाथाद्वारा (राजसमन्द)
- लकड़ा भोमिया – जैसलमेर

बाबा मामा देव

- राजस्थान का एकमात्र देवता जिसकी मूर्ति न होकर काष्ठ का तोरण होता है। मन्दिर खेजड़ी वृक्ष के नीचे। दूध से नहलाया जाता है।
- इसे बरसात का लोकदेवता कहते हैं।
- प्रसन्न रखने के लिए भैंसे की बलि दी जाती है।
- मामादेव का मुख्य मन्दिर – स्यालोदड़ा (सीकर) में है।
- यहाँ पर प्रतिवर्ष रामनवमी को मेला भरता है।
- सवारी – भैंसा / पाड़ा

जवाहरजी – डूँगजी

- ये दोनों चचरे भाई थे।
- वास्तविक नाम – बालजी व भूरजी था।
- जवाहरजी बाठौड़ गाँव – सीकर व डूँगजी पटौदा (लक्ष्मणगढ) सीकर के निवासी थे। ये दोनों शेखावत या कच्छवाह राजपूत थे।
- इनको लूट – पाट का देवता कहते है।
- जवाहर जी को इनके ससुराल झडवासा अजमेर में भैरुसिंह की सहायता से गिरफ्तार कर आगरा जेल मे कैद कर लिया।
- 1846 ई. लोटीया जाट, करणीया, मीणा, सांवत मीणा, सेफुभील व मेहर इत्यादी के सहयोग से आगरा जेल से रिहा करवा लिया।
- 1846 ई. में इन्होंने सेवर (भरतपुर) जेल को लूटा।

- 1847 ई. में इन्होंने नसीराबाद अजमेर छावनी को लूटा। वहाँ से इन्हें – 27 हजार रुपये प्राप्त हुए।
- इन्होंने भीलवाड़ा में धनोप माता मन्दिर बनवाया और पुष्कर में सीढ़ियाँ लगाई थी।
- इन्हें धाड़वी धड़ायती लोक देवता भी कहते है।

  ↓→ काफिलों को लूटने वाले (गरीबों में बाँटने वाले)

बाबा झूंझार जी

- जन्म – स्वंतत्रता से पूर्व – इमलोहा (सीकर) राजपूत परिवार तीन भाइयों व वर – वधु सहित 5 मूर्तियाँ है।
- इनका मन्दिर प्रायः खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।
- रामनवमी (चैत्रशुक्ल नवमी) को स्यालोदड़ा सीकर में मेला भरता है।
- इन्हें मिरगी निवारण लोक देवता भी कहते हैं।
- नवविवाहित वर – वधु के जोड़े जात देने आते हैं।
- छोटे बच्चों के झाडूला भी उतारते हैं।

भंवर बाबा

- नांगला – जहाज (भरतपुर)
- इन्हें भतूल्या (भभूल्या) का देव कहते हैं।
- वाहन – भैसा/पाड़ा – एक हाथ में झाड़ व दूसरे हाथ में लाठी। ग्वालों के पालन हार, कष्ठनिवारक मन्दिर – नीम के वृक्ष के नीचे।

देव बाबा

- इन्होंने मृत्यु के बाद अपनी बहन 'एलादी' को भात पहनाया।
- नांगला – जहाज – भरतपुर
- गुर्जर ग्वालों के देवता, मेला भाद्रपद शुक्ल – 5 – 6 चेत्र शुक्ल 5
- मेव, गुर्जर व मीणा जाति के प्रमुख देवता हैं। (पशु चिकित्सा का अच्छा ज्ञान)

कल्लाजी राठौड़

- (दुर्गाष्टमी) जन्म वि.स. 1601 सामियाना गाँव मेड़ता सिटी नागौर
- पिता – आसकरण माता – श्वेतकंवर
- पत्नी – कृष्णा/कृष्णापादे शिवगढ शासक कृष्णदास की पुत्री।
- कल्लाजी की बुआ मीरा बाई थी। गुरू – भैरवनाथ
- इन्हें चार हाथों वाले लोकदेवता भी कहते हैं।
- इन्हें दो सिर वाले लोकदेवता कहते हैं।
- इन्हें शेष नाग का अवतार माना जाता है। बालब्रह्मचारी, योगी।
- इन्हें औषधी विज्ञान, अस्त्रशस्त्र का ज्ञाता, योगा अभ्यास में भी पारंगत थे।
- कल्लाजी की छतरी – चित्तौड़गढ दुर्ग में है। (भरवपौल)
- इन्हें कणधम, कल्याण, केहर केसर व अफीम का स्वामी भी कहते है।
- कल्लाजी का मंदिर सामलिया ग्राम डूँगरपुर में काले पत्थर की मूर्ती है।
- जिस पर भील केसर व अफीम चढ़ाते है।
- प्रधान/सिद्ध पीठ – रनेला (उदयपुर) में है यहीं पर इनकी पत्नी कृष्णादेवी इनके साथ सती हुई थी।
- यहाँ पर आश्विन शुक्ल नवमी को मुख्य मेला भरता है।
- छोटा मेला हर रविवार को भरता है।

- भूत पिशाच ग्रस्त लोग, रोगी पशु, पागल कुत्ता, मानसिक रोगी, गौयरो से दंशित जहर से निवारण होता है।
- मेवाड़ महाराणा उदयसिंह के समकालीन थे।
- फरवरी – 1568 मेवाड (चित्तौड़ दुर्ग) की रक्षा करते हुए अकबर के सामने वीर गति को प्राप्त हो गया था।
- जयमल इनके चाचा थे।
- वीर गति को प्राप्त – फरवरी – 1568 भैरवपोल
- कल्लाजी की कुल देवी – नागणेची माता थी।

देवनारायण जी

- जन्मः वि. स. 1300/ई. 1239 में मालेसर की डूंगरी गोठदड़ावत आसींद भीलवाड़ा।
- पिता – सवाई भोज
- माता – सेढूखट्टाणी थी।
- पत्नी – पिंपलदे (धार मध्यप्रदेश, जयसिंह की पुत्री)
- बगड़ावत – गुर्जर परिवार में हुआ था।
- अवतार – विष्णु (गुर्जर जाति मानती है।)
- बचपन/लालन – पालन देवास मध्यप्रदेश (ननिहाल)
- बचपन का नाम – उदय सिंह था।
- देवनारायण जी के गीत – 'बगड़ावत' कहलाते हैं।
- घोड़े का नाम – लिलागर/नीलागर
- देवनारायण ने भिन्नाय अजमेर शासक दुर्जनशाल से अपने पिता की हत्या का बदला लेते हुए दुर्जनशाल की हत्या की व गायों को आजाद करवाया व भिन्नाय का शासक अपने छोटे भाई महेन्दू को बना दिया।
- देवनारायण जी ने नीम को पत्तियों व गोमूत्र से 36 प्रकार रोग निवारक औषधि बनायी अतः देवनारायण जी को औषधिजनक/आयुर्वेदिक जनक कहते हैं।
- देवनारायण जी को राज्यक्रान्ति का जनक भी कहते है।
- इनका मन्दिर नीम वृक्ष के नीचे कच्ची ईंटों के साथ होता है।
- इनका पूजा नीम की पत्तियाँ व कच्ची ईंटों के साथ होती है। इनको भोग दलिया व छाछ का लगाया जाता है।
- देवनारायण जी का मूल देवरा आसींद (भीलवाड़ा) गोठ दड़ावत में है।
- देवनारायण जी ने देवमाली ब्यावर (अजमेर) में अपनी देह त्यागी थी यहाँ पर भादवा शुक्ल सप्तमी को मेला भरता है।
- देवनारायण जी फिल्म बन चुकी है जिसमें देवजी की भूमिका नाथू सिंह गुर्जर ने निभाई थी।

अन्य देवरे

- देवमाली (ब्यावर, अजमेर) –भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को मेला भरता है।
- देवधाम जोधपुरिया निवाई (टोंक) – प्रमुख धाम (गुर्जर जाति का)
- गुजरियावास – नागौर
- देवडूँगरी – चित्तौड़गढ – मंन्दिर निर्माण – महाराणा सांगा – आराध्य देव
- आसींद (भीलवाड़ा) – गुर्जरों का पवित्र स्थल है। (मुख्य पूजा स्थल)

देवनारायण जी फड़

- सबसे प्राचीन सबसे लम्बी, बडी व छोटी – 2 सितम्बर, 1992 में भारत सरकार ने 2X2 Cm. डाक टिकट जारी की ₹ 5 की।
- फड़ – 30 फुट लम्बी व 5 फुट चौड़ी है।
- जंतर वाद्य यंत्र का प्रयोग होता है।
- अविवाहित गुर्जर भोपों द्वारा वाचन।

- देवनारायण जी स्वयं पर 2011 में ₹ 5 की डाक टिकट जारी की।
- देवनारायण जी के हर रातदिन पहर गाये जाने पर 6 माह में पूर्ण होते हैं।

रूपानाथ जी/झरड़ाजी

- पाबूजी राठौड़ के भतीजे हैं।
- हिमाचल प्रदेश में 'बालकनाथ' के रूप में पूजा होती है।
- जिन्दराव खिंची की हत्या कर पाबूजी के मौत का बदला लिया।
- राजस्थान में मुख्य पूजा स्थल–कोलुमण्ड (जोधपुर) सिम्भुदड़ा – नोखा – बीकानेर।

तेजाजी

- जन्म – वि.स. 1130 माघ शुक्ल चतुर्दशी खरनाल (नागौर)
- पिता – ताहड़ जी माता – रामकुंवरी
- लालन – पालन – बख्शोजी – सुगणा
- बहिन – राजल, बुंगरी माता (मन्दिर – नागौर)
- पत्नी – पेमलदे – पनेर (अजमेर) – रामचन्द्र जाट की पुत्री । सास – बादलदे
- विवाह स्थल – नागधार – पुष्कर – अजमेर
- गुरू – गोसाई नाथ जी।
- सवारी – लीलण/सिणगारी
- तेजाजी के खेत – खाबड़ा / धोरा
- पवित्र जलाशय – खेण गाँव नागौर में गैण तालाब
- गीत – तेजा टेर
- कर्मस्थली – बांसी दुगारी – बून्दी – तेजाजी का पवित्र स्थान है।
- उपनामः
  काला – बाबा का देवता, गायों का देवता, सांपो का देवता
  ↓ ↓
  सर्प नारू रोग, कृषि उपकरण देवता, अजमेर के प्रमुख लोकदेवता।
- कृषि कार्य के दौरान जहरीले जानवरों से बचने के लिए 9 गाँठों की गोगा राखड़ी बाँधते हैं।
- राजस्थान के सर्वाधिक लोकप्रिय देवता – तेजाजी है।
- तेजाजी ने मण्डावरिया (अजमेर) में मेर के मीणाओं से लाच्छा गुजरी की गायों के लिए युद्ध लड़ा।
- लाच्छा गुजरी – पेमल की सहेली
- सेन्दरिया – मसूदा – अजमेर में तेजाजी को '''बासक' नामक साँप ने डंक मारा भाद्रपद शुक्ल 10 वि. स. 1160 सुरसुरा (अजमेर) में तेजाजी वीरगति को प्राप्त होते है और इसी स्थान पर पेमल सती हुई थी।

- **मेला**
  - वीर तेजा पशु मेला – परबतसर (नागौर)
  - भाद्रपद शुक्ल दशमी (तेजा दशमी)
- धार्मिक मेला – खरनाल – नागौर (भाद्रपद शुक्ल दशमी)
  नोट : गहलोत सरकार द्वारा 2019 से राजकीय अवकाश की घोषणा की जाती है।
- वर्ष 2011 में तेजाजी पर ₹ 5 का डाक टिकट जारी हुआ।
- प्रतीक चिन्ह – अश्वरोही, हाथ में तलवार, जीभ पर सर्पदंश
- सहरिया जनजाति तेजाजी को इष्ट देव मानती है।

- तेजाजी के फड़ वाचन के समय – रावण हत्या वाद्य यंत्र।
- कृषकों का आराध्य देव है।
- तेजाजी के नाम पर ''सर्पदंश चिकित्सालय'' भावंता (अजमेर) (गोमूत्र निः शुल्क)
- यहाँ पर तेजाजी के भोपों द्वारा सर्प दंश का जहर चुसकर निकाला जाता है।
- जाति – जाट – गौत्र – धोलिया, वंश – नागवंश
- तेजाजी का विवाह बालि उम्र में 'बाल विवाह' हुआ था।
- तेजाजी की गाय का नाम रत्नी था।
- अजमेर जिले के लोकदेवता है।
- तेजाजी के भोपे –घोड़ला कहलाते है – कुम्हार जाति के होते हैं।
  नोट : गायों के मुक्तिदाता साँपो के देवता क्रमशः गोगाजी, तेजाजी, पाबूजी है।
- तेजाजी ने मृत्यु का समाचार लीलण द्वारा घर पर पहुँचाया।

तल्लीनाथ जी

- शेरगढ ठिकाने (जोधपुर) के ठाकुर
- पिता – वीरमदेव, भाई – मण्डोर शासक राव चुड़ा, गुरू – जालन्धरनाथ
- पूजास्थल – पंचमुखी पहाड़ी – पाँचोटा गाँव – जालौर
- प्रकृति प्रेमी लोकदेवता – वृक्षों के काटने पर रोक लगाने वाले प्रथम लोकदेवता ओरण – मन्दिर के आस पास का क्षेत्र + जालौर के लोग ओरण मानते हैं।
- जालौर के प्रसिद्ध लोक देवता है।
- मूल नाम – गांगदेव राठौड़।

भूरिया बाबा/गोतमेश्वर

- मीणा जनजाति का आराध्य देव है।
- मीणा जनजाति के लोग इनकी कभी झूठी कसम नहीं खाते है।
- मुख्य पूजा स्थलः अरणोद (प्रतापगढ), नाणारेलवे स्टेशन चांदिल अथवा चौटाला पर्वत सिरोही में है।
  1. अरणोद (प्रतापगढ़)– मेला – प्रतिवर्ष – बैशाख शुक्ल एकादशी से ज्येष्ठ कृष्ण – द्वितीया (मीणा जाति का लक्खी मेला) मुख्य मेला – बैशाख पूर्णिमा
     नोटः राजस्थान का लक्खी मेला – कैलादेवी मेला – त्रिकुट पर्वत – करौली जिले।
     ↓→ चेत्र शुक्ल अष्टमी
  2. नाणा रेलवे स्टेशन – पाली
     ↓→ 10 Km. दूरी चोटीला / चांदील पर्वत – सिरोही
     - यहाँ पर भूरिया बाबा का मन्दिर सुकड़ी नदी के किनारे है, इस नदी को गंगा नदी की पावणी। गंगा पातित कहा जाता है। इस नदी में मीणा जाति के लोग अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करते है।
     - यहाँ पर मेला – 13 अप्रैल से 15 अप्रैल
     - इस मन्दिर के पास पाप मुक्ति/गंगोद्भ कुण्ड भी है।
     - भूरिया बाबा शौर्य का प्रतीक है।
     - गोडवाड़ मीणाओं का आराध्य देव है।

हरीराम बाबा

- जन्म विक्रम संवत् 1959 झोरड़ा गांव नागौर
- पिता – रामनारायण माता – चंदणीदेवी गुरू – भूरा
- जहरीले जानवर कर दंश का ईलाज मंत्रोपचार से करते है।
- हरीराम बाबा के मन्दिर में साँप की बम्बी की पूजा होती है व बाबा के प्रतिकरूप में 'चरण कमल' है।
- प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल चतुर्थ व भाद्रपद शुक्ल– पंचमी की बड़े मेले लगते हैं।

इल्लोजी

- सर्वाधिक मान्यता – जालौर – बाड़मेर
- राजस्थान में छेड़छाड़ के लोकदेवता।
- होलिका के प्रेमी/पति।
- इल्लोजी की बारात जालौर – बालोतरा बाड़मेर की प्रसिद्ध है।
- इल्लोजी की प्रतिमा – आदमकद् नग्न अवस्था में होती है।
- बांझ स्त्रियों द्वारा इलो–इल्ला नृत्य करने पर पुत्र प्राप्ति होती है।
- मारवाड़ में होली के अवसर पर पूजा होती है।
- धूलण्डी इल्लोजी के स्मृति में मनाई जाती है।

पीर बावसी

- प्रताप सिंह मण्डेला के पुत्र
- गोडावाड़ क्षेत्र में मान्यता।
- **प्रमुख मंदिर** – काला टोकरा गाँव अरावली पर्वतमाला में जालौर – सिरोही तट सीमा पर यहाँ चैत्र शुक्ल पंचमी को मेला भरता है।
- गौरक्षा हेतु प्राण त्यागे थे।
- इसके मन्दिर में गुलाबी बान नृत्य होता है जिसमें गणगौर व बावसी की गाथाएँ गाई जाती है।
- आदिवासियों के प्रसिद्ध लोकदेवता।

आलम जी : बाडगेर

- मूलनाम – जेतमलोठ राठौड़
- पूजा स्थलः राड़घरा – ढोंगी नामक रेत का टीला – आलम जी का धोरा
- मेला – भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को भरता है।

नोटः आलम जी का धोरा – घोड़ी प्रजनन के रूप में विख्यात है।

आलमजी का धोरा – गुढामलानी बाडमेर – घोड़ों के तीर्थस्थल के रूप में माना जाता है।

लोकदेवता	सवारी	अवतार	नृत्य	मेले
रामदेवजी	नीला घोड़ा – रेवन्त	कृष्ण	तेरहताली	भाद्रपद शुक्ल – दशमी
पाबूजी	घोड़ी केसर कालबी	लक्ष्मण	थाली	चैत्र अमावस्या
गोगाजी	घोड़ी – गोगा बप्पा / नीली घोड़ी	–	गेगा	भाद्रपद कृष्ण – नवमी
हड़बूजी	सियार	–	–	भाद्रपद शुक्ल – दशमी

मेहाजी	घोड़ा – किरड़ – काबरा	–	–	भाद्रपद कृष्ण – अष्टमी
तेजाजी	घोड़ी – लीलण	–	गोगा	भाद्रपद शुक्ल – दशमी
देवनारायण	घोड़ा – लीलागर	विष्णु	–	भाद्रपद शुक्ल – सप्तमी
बावासी	–	–	गुलाबी – बान	चैत्र शुक्ल – पंचमी